



**धूमउ तजइ सहज करुआई। अगरु प्रसंग सुगंध बसाई।।
भनिति भदेस बस्तु भलि बरनी। राम कथा जग मंगल करनी।।**

धुआँ भी अगर के संग से सुगंधित होकर अपने स्वाभाविक कडुवेपन को छोड़ देता है। मेरी कविता अवश्य भद्दी है, परन्तु इसमें जगत् का कल्याण करने वाली राम कथा रूपी उत्तम वस्तु का वर्णन किया गया है।
—श्रीरामचरितमानस/5

क्यू.एस. विषय रैंकिंग 2026: आई.आई.टी. दिल्ली पांच प्रमुख विषयों में दुनिया के शीर्ष 50 में; भारत के शीर्षतम इंजीनियरी एवं प्रौद्योगिकी संस्थान के रूप में कायम

25 मार्च, 2026 (बुधवार) को घोषित नवीनतम क्यू.एस. वैश्विक विश्वविद्यालय की विषयवार रैंकिंग 2026 के अनुसार आई.आई.टी. दिल्ली ने वैश्विक स्तर पर शीर्ष 50 विषयों में अपनी जगह बनाई है। इस रैंकिंग में संस्थान के विद्युत इंजीनियरी, यांत्रिक इंजीनियरी, कंप्यूटर विज्ञान, रासायनिक इंजीनियरी और सिविल इंजीनियरी विषयों ने विश्व के शीर्ष 50 विषयों में स्थान प्राप्त किया है। विद्युत इंजीनियरी को शीर्षतम यानी 36वीं रैंक मिली है; इसके बाद यांत्रिक इंजीनियरी (44वें), कंप्यूटर विज्ञान (45वें), रासायनिक इंजीनियरी (48वें) और सिविल इंजीनियरी 50वें स्थान पर रही। इसके अलावा, वैश्विक रैंकिंग 36 के साथ आई.आई.टी. दिल्ली इंजीनियरी और प्रौद्योगिकी श्रेणी में भारत का शीर्ष संस्थान बना हुआ है।

रैंकिंग के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त करते हुए, प्रो. सोमनाथ बैद्य रॉय, संकायाध्यक्ष (योजना) ने कहा कि "आई.आई.टी. दिल्ली विद्यार्थियों को विश्वस्तरीय एवं सुलभ शिक्षा प्रदान करता है, जिसके फलस्वरूप वे अकादमिक, औद्योगिक, वाणिज्यिक तथा शासन-प्रशासन के विभिन्न क्षेत्रों में नेतृत्वकारी भूमिकाएँ निभाते हैं। यद्यपि रैंकिंग हमारे समस्त कार्यकलापों के व्यापक परिप्रेक्ष्य को पूर्णतः अभिव्यक्त नहीं करतीं, तथापि वे हमारे द्वारा किए गए

सतत परिश्रम एवं प्रतिबद्धता की महत्वपूर्ण स्वीकृति अवश्य हैं।"

विद्युत इंजीनियरी विभाग द्वारा अर्जित विषय-आधारित रैंकिंग पर टिप्पणी करते हुए विभागाध्यक्ष प्रो. शंकर प्रक्रिया ने कहा, "विद्युत इंजीनियरी विभाग की उन्नत क्यू.एस. अंतरराष्ट्रीय रैंकिंग हमारे सुदृढ़ विकास-पथ को प्रतिबिंबित करती है। हमने जिन प्रमुख क्षेत्रों की पहचान की है, उनमें हम तीव्र प्रगति कर रहे हैं। आधुनिकीकृत पाठ्यक्रमों, उन्नत प्रयोगशालाओं, वी.एल.एस.आई. डिज़ाइन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा जैसी नई पहलों तथा हमारे एक पूर्व विद्यार्थी के सहयोग से स्थापित विद्यार्थी नवाचार प्रयोगशाला के ज़रिए हम नवाचार और उत्कृष्टता को प्रोत्साहित कर रहे हैं। ये प्रयास हमें आगामी वर्षों में स्थायी और सतत विकास हेतु सशक्त आधार प्रदान करते हैं।

प्रो. पी.एम.वी. सुब्बाराव, अध्यक्ष, यांत्रिक इंजीनियरी विभाग ने कहा कि "उन्नत रैंकिंग इंजीनियरी में उत्कृष्टता के प्रति हमारे अडिग समर्पण को दर्शाती है। हमने मूलतः अपने प्रयासों को जारी रखा और साथ ही ए.आई. संवर्धित तकनीकों में अग्रणी भूमिका निभाई—जिससे हमें यह यकीन होता है कि हम प्रगति के पथ पर अग्रसर हैं और रैंकिंग में हमारी उत्कृष्ट गतिविधियाँ परिलक्षित होती हैं। विभाग ने डी.आर.डी.ओ. द्वारा वित्तपोषित जे.ए.टी.

सी. (JATC) में उल्लेखनीय योगदान दिया है। RuTAG और अन्य पहलों के माध्यम से सामाजिक रूप से प्रासंगिक और सतत तकनीकों में हमारा योगदान हमेशा मजबूत रहा है।"

प्रो. नवीन गर्ग, अध्यक्ष, कंप्यूटर विज्ञान एवं इंजीनियरी विभाग ने कहा कि "कंप्यूटर विज्ञान विभाग अत्यंत प्रतिभाशाली युवा संकाय सदस्यों और शोधकर्ता विद्यार्थियों को लगातार आकर्षित करता रहा है, जिससे इसका शैक्षणिक वातावरण सशक्त होता है और यह देश के सबसे प्रतिष्ठित कंप्यूटर विज्ञान विभागों में अपनी स्थिति सुदृढ़ करता है। हाल के पाठ्यक्रम सुधारों ने गुणवत्ता से किसी भी प्रकार का समझौता किए बिना शैक्षणिक पाठ्यक्रमों को अधिक लचीला बनाया है। इसके साथ ही, कंप्यूटिंग अवसंरचना में निरंतर निवेश हमारी क्षमताओं को और उन्नत बनाते हैं तथा हमें 2030 तक वैश्विक स्तर पर कंप्यूटर विज्ञान के शीर्ष 30 विभागों में शामिल होने में सहयोग करते हैं।"

प्रो. अनुराग राठौर, अध्यक्ष, रासायनिक इंजीनियरी विभाग, आई.आई.टी. दिल्ली ने कहा, "पिछले 5 वर्षों में 40 करोड़ रु. से अधिक के औद्योगिक वित्तपोषण, पेटेंटों में 75% की वृद्धि, और सहकर्म-समीक्षित (पीयर रीव्यूड) प्रकाशनों में 50% की बढ़ोतरी के साथ, रासायनिक

इंजीनियरी विभाग लगातार देश के सबसे प्रतिष्ठित विभागों में से एक के रूप में स्थान प्राप्त कर रहा है। हमारे उत्कृष्टता केंद्र, स्टार्टअप्स और हमारी वैश्विक पहलें हमारे प्रभाव को स्पष्ट रूप से रेखांकित करती हैं। हमारा उद्देश्य किफायती और सतत तकनीकी समाधान विकसित करना है, जो देश और विश्व की स्वास्थ्य, ऊर्जा, पर्यावरण और सामग्री संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करें।

प्रो. वसंत मतसागर, अध्यक्ष, सिविल एवं पर्यावरणीय इंजीनियरी विभाग ने कहा— "हमने पाठ्यक्रमों को पूर्णतः नया स्वरूप प्रदान किया है ताकि उनमें नवीनतम प्रौद्योगिकियों जैसे— निर्माण स्वचालन एवं रोबोटिक्स, मानव रहित हवाई वाहन (यू.ए.वी.) / ड्रोन प्रौद्योगिकी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता एवं मशीन लर्निंग, तथा जियोमैटिक्स को सम्मिलित किया जा सके। विभाग के संकाय सहयोगी उच्च-मूल्य प्रायोजित अनुसंधान परियोजनाओं का संचालन कर रहे हैं, जिनका उद्देश्य जलवायु-संवेदनशील अवसंरचना विकास में सततता प्राप्त करने हेतु नवीन प्रथाओं का विकास करने के साथ ही आपदा सहनशीलता को सुनिश्चित करना भी है।"

नवीनतम यू.एस. विषय-आधारित रैंकिंग के अनुसार, आई.आई.टी. दिल्ली के चुनिंदा विषयों ने शीर्ष 50 में स्थान प्राप्त करते हुए इंजीनियरी एवं प्रौद्योगिकी, प्राकृतिक विज्ञान तथा सामाजिक विज्ञान एवं प्रबंधन जैसे व्यापक क्षेत्रों के अंतर्गत आने वाले बारह प्रमुख विषयों ने उल्लेखनीय रूप से शीर्ष 100 की सूची में स्थान प्राप्त किया है।

सेवानिवृत्तियाँ

संस्थान के निम्नलिखित संकाय एवं स्टाफ सदस्य अधिवर्षिता पर 31 मार्च, 2026 को अपराहन में संस्थान से सेवानिवृत्त हो गए हैं:-

प्रो. चिन्मय शंकर डे, प्रोफेसर, कुसुमा जैव विज्ञान स्कूल



प्रो. चिन्मय शंकर डे ने 19 अप्रैल, 2010 को संस्थान में प्रोफेसर के रूप में कार्यभार ग्रहण किया

था। संस्थान में कार्यभार ग्रहण करने से पहले आपने भारतीय रासायनिक जीवविज्ञान संस्थान, कोलकाता से पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। आपने कैलिफोर्निया इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नॉलजी, यू.एस.ए. और बेयलर कॉलेज ऑफ मेडिसिन, टेक्सस, यू.एस.ए. में पोस्ट डॉक्टरेट अनुसंधान किया। 1994 में आप राष्ट्रीय औषधीय शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान (NIPER) पंजाब में सहायक प्रोफेसर के रूप में शामिल हुए और वर्ष 2000 के दौरान आप प्रोफेसर बने और बाद में वर्ष 2010 तक जैव प्रौद्योगिकी विभाग, एन.आई.पी.ई.आर. के अध्यक्ष के रूप में अपनी सेवाएं प्रदान की। प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय जर्नलों में आपके लगभग 90 प्राथमिक अनुसंधान प्रकाशन और 6 समीक्षाएं प्रकाशित हो चुकी हैं। आपके नाम एक यू.एस. पेटेंट तथा 3 बुक चैप्टर हैं। आपने स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर लगभग 30 वर्षों तक अध्यापन कार्य किया है। आपने कई पीएच.डी. एवं मास्टर थीसिस का मार्गदर्शन किया। विज्ञान क्षेत्र में आपके महत्वपूर्ण योगदान के लिए आपको कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया : (1) वर्ष 2003 में 'शांति स्वरूप भटनागर अवॉर्ड'। (2) वर्ष 2003 में 'नेशनल बायोसाइंस अवॉर्ड'। (3) "फार्मास्युटिकल बायोटेक्नॉलजी" में ओ.पी.पी.आई. अवॉर्ड— 2005 (4) सी.डी.आर. आई अवॉर्ड फॉर एक्सीलेन्स इन ड्रग रिसर्च— 2008 (5) जे.सी. बोस फेलोशिप, 2009। आप मद्रास के डायबिटीज रिसर्च फाउंडेशन में विजिटिंग साइंटिस्ट और हैदराबाद के इंस्टीट्यूट ऑफ लाइफ साइंसेज़ में अनुबद्ध प्रोफेसर भी रहे हैं। आप साइंटिफिक रिपोर्ट्स (नेचर पब्लिशिंग ग्रुप) नामक जर्नल के संपादकीय मंडल के सदस्य रहे हैं। आप जर्नल ऑफ बायोफार्मास्युटिक्स एंड बायोटेक्नॉलजी, यू.एस.ए. में क्षेत्रीय सह-संपादक भी रहे हैं। इसके अतिरिक्त आप "ओपन पैरासाइटोलॉजी जर्नल", बेंथम पब्लिशर के संपादकीय मंडल के सदस्य रहे हैं। वर्तमान में आप 'प्रोसीडिंग्स ऑफ दि नेशनल एकेडमी ऑफ साइंस, इंडिया' के संपादक हैं। सौम्य स्वभाव के प्रो. चिन्मय शंकर डे अपने संकाय सदस्यों, विद्यार्थियों एवं

स्टाफ सदस्यों के बीच अत्यंत लोकप्रिय रहे हैं।

श्री मुरली हिंदवानी (25494), उप प्रशासनिक अधिकारी, कुलसचिव कार्यालय



श्री मुरली हिंदवानी ने 31 दिसंबर, 1987 को संस्थान में अवर श्रेणी लिपिक के रूप में कार्यभार

ग्रहण किया था। 01 जनवरी, 1996 को आर. एंड सी.डी.एस. के अंतर्गत प्रवर श्रेणी लिपिक में आपका चयन किया गया। 01 मई, 1998 को आर.सी.पी.एस. के अंतर्गत आपको वरिष्ठ सहायक के रूप में मैप किया गया तथा इसी योजना के अंतर्गत 01 जनवरी, 2008 को कनिष्ठ अधीक्षक के रूप में पदोन्नत किया गया। 31 दिसंबर, 2017 को एम.ए.सी.पी. के अंतर्गत आपको लेवल-7 में उन्नयन दिया गया। 22 दिसंबर, 2022 को आर. एंड पी.आर. के अंतर्गत आपको सहायक प्रशासनिक अधिकारी के रूप में पुनः पदनामित किया गया। 22 फरवरी, 2023 को डी.पी.सी. के अंतर्गत आपको उप प्रशासनिक अधिकारी के रूप में पदोन्नत किया गया। मिलनसार एवं विनम्र स्वभाव के श्री मुरली हिंदवानी एक मेहनती, योग्य एवं कर्मठ उप प्रशासनिक अधिकारी रहे हैं।

श्रीमती सुषमा वत्स (25809), उप प्रशासनिक अधिकारी, यांत्रिक इंजीनियरी विभाग



श्रीमती सुषमा वत्स ने 18 जून, 1991 को संस्थान में आशुलिपिक के रूप में कार्यभार ग्रहण

किया था। 01 मई, 1998 को आर.सी.पी.एस. के अंतर्गत आपको वरिष्ठ सहायक के रूप में मैप किया गया तथा इसी योजना के अंतर्गत 01 जुलाई, 2003 में कनिष्ठ अधीक्षक के रूप में पदोन्नत किया गया। 18 जून, 2011 को एम.ए.सी.पी. के अंतर्गत आपको ग्रेड वेतन ₹4600/-, वेतन बैंड-2 में तथा इसी

योजना के अंतर्गत 18 जून, 2021 को ग्रेड वेतन ₹4800/- में उन्नयन दिया गया। 08 दिसंबर, 2022 को डी.पी.सी. के अंतर्गत आपको अधीक्षक के रूप में पदोन्नत किया गया। 22 दिसंबर, 2022 को आर. एंड पी. आर. के अंतर्गत आपको उप प्रशासनिक अधिकारी के रूप में पुनः पदनामित किया गया।

मिलनसार व्यक्तित्व की श्रीमती सुषमा वत्स एक मेहनती एवं कर्मठ उप प्रशासनिक अधिकारी रही हैं।

संस्थान समुदाय उपरोक्त स्टाफ सदस्यों को भावभीनी विदाई देते हुए उनके व उनके परिवार के लिए सुख, समृद्धि एवं शांतिमय जीवन की कामना करता है।

पुनर्नियुक्ति

प्रो. चिन्मय शंकर डे (कुसुमा जैव विज्ञान स्कूल) को संस्थान संविधि के पैरा 13(2) के अनुसार वर्तमान शैक्षिक सत्र के अंत अर्थात् 30.06.2026 तक के लिए कुसुमा जैव विज्ञान स्कूल में प्रोफेसर के रूप में पुनर्नियुक्त किया गया है।

संस्थान में केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, गृह मंत्रालय के सहयोग से आयोजित "पाँच दिवसीय अनुवाद एवं राजभाषा प्रशिक्षण कार्यक्रम"

संस्थान के हिंदी कक्ष द्वारा केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, गृह मंत्रालय के सहयोग से एक "पाँच दिवसीय अनुवाद एवं राजभाषा प्रशिक्षण कार्यशाला" 16 मार्च, 2026 से 20 मार्च, 2026 तक आयोजित की गई। इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य प्रतिभागियों को राजभाषा कार्यान्वयन, अनुवाद प्रक्रिया, प्रशासनिक शब्दावली, सूचना प्रौद्योगिकी आधारित उपकरणों तथा व्यावहारिक अनुवाद कौशल जैसे विषयों से परिचित कराना था। कार्यक्रम में केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो के वक्ताओं द्वारा प्रतिदिन अनुवाद एवं राजभाषा से जुड़े विभिन्न विषयों पर प्रशिक्षण एवं अभ्यास सत्र लिए गए, जिनसे प्रतिभागियों के

ज्ञान एवं कौशल में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।

कार्यक्रम का शुभारंभ 16.03.2026 को उद्घाटन सत्र के साथ हुआ जिसमें सर्वप्रथम डॉ. स्वाती ठाकुर, हिंदी अधिकारी ने सभी वरिष्ठ अधिकारियों, आमंत्रित वक्ता एवं प्रतिभागियों का स्वागत किया और जीवन में निरंतर सीखते रहने की प्रासंगिकता पर बात की। इस सत्र की अध्यक्षता प्रो. अरविंद कुमार नेमा, उप निदेशक (प्रचालन) ने की। इस अवसर पर श्री अतुल व्यास (कुलसचिव) तथा श्री नरेश कुमार, संयुक्त निदेशक, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो की भी

उपस्थिति रही।

कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए डॉ. नीरज चौरसिया (अध्यक्ष, हिंदी कक्ष) ने कार्यक्रम में भाग लेने वाले सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का हार्दिक स्वागत किया और कार्यक्रम का संक्षिप्त परिचय दिया और उम्मीद व्यक्त की कि यह कार्यक्रम अनुवाद एवं राजभाषा के संबंध में काफी ज्ञानवर्धक रहेगा। इसके साथ ही उन्होंने सभी प्रतिभागियों से इस पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का अधिकाधिक लाभ उठाने का अनुरोध किया। कुलसचिव महोदय ने अपने संबोधन में कार्यशाला के आयोजन के लिए हिंदी कक्ष और केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो



की सराहना करते हुए इसमें प्रबल भागीदारी हेतु प्रतिभागियों को प्रोत्साहित किया।

उप निदेशक (प्रचालन) ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में इस कार्यशाला का सदुपयोग करने और कार्यशाला के दौरान अर्जित कौशल को अन्य सहकर्मियों से साझा करने के लिए प्रोत्साहित किया।

श्री नरेश कुमार, संयुक्त निदेशक, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो तथा कार्यक्रम के अतिथि वक्ता ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो की स्थापना एवं उसके उद्देश्यों पर चर्चा की तथा ब्यूरो द्वारा संचालित प्रशिक्षण कार्यक्रमों की जानकारी दी। इसके पश्चात उन्होंने "भारत सरकार की राजभाषा नीति" विषय पर विस्तृत सत्र लिया। उन्होंने राजभाषा नीति के विभिन्न प्रावधानों, उसके क्रियान्वयन तथा प्रशासनिक महत्त्व पर प्रकाश डाला। इसके उपरांत दूसरे सत्र में डॉ. वानिका, सहायक निदेशक, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो द्वारा "सामान्य प्रशासन से जुड़े वाक्यांश और अभिव्यक्तियाँ" विषय पर व्याख्यान दिया गया। इस सत्र में दैनिक प्रशासनिक कार्यों में प्रयुक्त होने वाले वाक्यांशों एवं उनके प्रभावी उपयोग की जानकारी प्रदान की गई।

दूसरे दिन 17.03.2026 के प्रथम सत्र का आरंभ "अनुवाद: प्रक्रिया एवं अभ्यास" विषय से हुआ। श्रीमती ऋचा अधिकारी, सहायक निदेशक, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो द्वारा यह सत्र लिया गया। इस सत्र में अनुवाद की मूलभूत प्रक्रिया, सिद्धांत तथा व्यावहारिक अभ्यास के माध्यम से प्रतिभागियों को प्रशिक्षित किया गया। इस दिन के द्वितीय सत्र में "कार्यालयीन अनुवाद: समस्याएं एवं समाधान" विषय पर डॉ. गौतम, सहायक निदेशक, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो ने प्रतिभागियों को कार्यालयीन अनुवाद की व्यावहारिक समस्याओं एवं उनके समाधानों की जानकारी दी।

तीसरे दिन अर्थात् 18.03.2026 को प्रथम सत्र "मानक वर्तनी: समस्याएं व समाधान" विषय पर श्रीमती रेखा शर्मा, सहायक निदेशक, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो द्वारा लिया गया। उन्होंने हिंदी लेखन में शुद्धता एवं समानता बनाए रखने के लिए आवश्यक मानकों पर विस्तार से चर्चा की। द्वितीय सत्र में "सूचना प्रौद्योगिकी: अनुवाद एवं हिंदी टूल्स" विषय पर श्रीमती ऋचा अधिकारी, सहायक निदेशक, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो द्वारा प्रशिक्षण दिया गया। इस सत्र में विभिन्न डिजिटल उपकरणों एवं सॉफ्टवेयर के उपयोग से अनुवाद कार्य को अधिक प्रभावी बनाने के उपाय बताए गए।

चौथे दिन 19.03.2026 को "पारिभाषिक शब्दावली निर्माण की प्रक्रिया" विषय पर डॉ. आशुतोष वशिष्ठ, सहायक निदेशक, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो द्वारा प्रथम सत्र लिया गया। उन्होंने तकनीकी एवं प्रशासनिक शब्दों के निर्माण की प्रक्रिया को सरल एवं स्पष्ट रूप में समझाया। द्वितीय सत्र में "कार्यालयीन सामग्री: अनुवाद अभ्यास" विषय पर श्रीमती शशिकला, सहायक निदेशक, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो द्वारा प्रतिभागियों को व्यावहारिक अभ्यास कराया गया, जो कि प्रतिभागियों के लिए ज्ञानवर्धक सिद्ध हुआ।

पांचवे तथा कार्यक्रम के अंतिम दिन 20.03.2026 को "अनेकार्थी शब्दों के अनुवाद: समस्याएं व समाधान" विषय पर श्रीमती रेखा शर्मा, सहायक निदेशक, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो द्वारा सत्र लिया गया, जिसमें अनेकार्थी शब्दों के अनुवाद संबंधित समस्याओं और उनके समाधान पर विस्तृत चर्चा की गई।

कार्यशाला के समापन सत्र में डॉ. स्वाती ठाकुर, हिंदी अधिकारी ने उपस्थित अतिथियों व प्रतिभागियों का स्वागत किया।

इसके पश्चात डॉ. नीरज चौरसिया, अध्यक्ष, हिंदी कक्ष ने कार्यशाला का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया एवं इसके

महत्त्व एवं उपादेयता पर अपनी बात रखी।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि एवं आमंत्रित वक्ता श्री नरेश कुमार, संयुक्त निदेशक, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो ने कार्यशाला के दौरान प्रतिभागियों से प्राप्त हुई सकारात्मक प्रतिक्रिया की सराहना की और भविष्य में भी आई.आई.टी. दिल्ली के साथ ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रमों के आयोजन में सहयोग का आश्वासन दिया। श्री अतुल व्यास, कुलसचिव ने अपने संबोधन में प्रतिभागियों को कार्यशाला में सीखे ज्ञान व कौशल को अपने दैनिक पत्राचार में उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया। प्रो. अरविंद कुमार नेमा, उप निदेशक (प्रचालन) ने अपने संबोधन में कहा कि आप सबको देखते हुए मुझे यकीन हो रहा है कि यह प्रशिक्षण कार्यक्रम आप सभी प्रतिभागियों के लिए ज्ञानवर्धक एवं उपयोगी सिद्ध हुआ है। साथ ही, उन्होंने सीखने के द्विआयामी पहलू के बारे में भी बात की जहाँ विद्यार्थी और अध्यापक दोनों एक दूसरे से सीखते हैं क्योंकि सीखना हमेशा से एक लोकतांत्रिक प्रक्रिया है। इसके बाद प्रतिभागियों से कार्यशाला का फीडबैक लिया गया जिसमें पाया गया कि विशेषज्ञ वक्ताओं द्वारा दिए गए प्रशिक्षण एवं अभ्यास सत्रों से प्रतिभागियों के ज्ञान, कौशल एवं आत्मविश्वास में वृद्धि हुई। प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र वितरित करने के पश्चात डॉ. स्वाती ठाकुर, हिंदी अधिकारी ने सभी अतिथियों व वक्ताओं को उनके मार्गदर्शी संबोधन, अधिकारियों को उनके प्रशासनिक व सक्रिय सहयोग एवं प्रतिभागियों का सीखने की इस प्रक्रिया में जुड़ने के लिए धन्यवाद देते हुए कार्यशाला का समापन किया। सत्र का संयोजन श्रीमती इंद्रमणि, उप तकनीकी अधिकारी (हिंदी कक्ष) द्वारा किया गया।